अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : दसवीं- जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 05 जनवरी, 2025)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1=(15)

(i) तीन लाख उनचास हजार पाँच सौ पच्चीस (3,49,525) आवलिकाएँ होती हैं-
(क) एक समय में (ख) एक मिनट में
(ग) एक सैकण्ड में (घ) एक मुहूर्त में (ख)

(ii) द्वीन्द्रिय जीवों की उत्कृष्ट भवस्थिति होती है-
(क) 3 अहोरात्रि (ख) 49 अहोरात्रि
(ग) 6 माह (घ) 12 वर्ष (घ)

(iii) अर्द्ध पुद्गल परावर्तन काल उत्कृष्ट कायस्थिति होती है-
(क) समुच्चय निगोद की (ख) शुक्लपक्षी की
(ग) वनस्पतिकाय के 6 भेदों की (घ) समुच्चय बादर की (ख)

(iv) सूक्ष्म वनस्पति का उत्कृष्ट अन्तर काल है-
(क) सूक्ष्मकाल (ख) निगोद काल
(ग) पृथ्वीकाल (घ) बादरकाल (ग)

(v) दूसरे देवलोक की अपरिगृहीता देवी की अपेक्षा स्त्रीवेद की उत्कृष्ट काय स्थिति है-
(क) 110 पल्योपम पृथक्त्व करोड़ पूर्व अधिक
(ख) 100 पल्योपम पृथक्त्व करोड़ पूर्व अधिक
(ग) 18 पल्योपम पृथक्त्व करोड़ पूर्व अधिक
(घ) 14 पल्योपम पृथक्त्व करोड़ पूर्व अधिक (क)

(vi) उत्करिका भेद का सम्बंध है-
(क) फटने से (ख) चूर्ण से
(ग) प्रतर से (घ) खण्ड से (क)

(vii) लोक व्यवहार से ' पहाड़ जलता है' सत्य है-
(क) रूप सत्य (ख) प्रतीत्य सत्य
(ग) व्यवहार सत्य (घ) भाव सत्य (ग)

(viii) दूसरे भव में दीर्घायु और निरोग होने में यह व्यवहार भाषा कारण है-
(क) अनभिगृहीता (ख) अभिगृहीता
(ग) प्रज्ञापनी (घ) व्याकृता (ग)

(ix) एक मुहूर्त होता है-
(क) सात स्तोक का (ख) 77 लव का
(ग) सात पाणुकाल का (घ) असंख्यात आवलिका का (ख)

(x) एक कुक्षि होती है-
(क) सोलह अंगुल की (ख) चार हाथ की
(ग) बारह अंगुल की (घ) दो हाथ की (घ)

(xi) भगवती सूत्र के बारहवें शतक के चौथे उद्देशक में थोकड़ा चलता है-
(क) काय स्थिति का (ख) भाषा का
(ग) मड़ाई निर्ग्रन्थ का (घ) पुद्गल परावर्तन का (घ)

(xii) मड़ाई निर्ग्रन्थ का जीव शुभाशुभ कर्मों से संयुक्त है, अतः कहलाता है-
(क) भूत (ख) विज्ञ
(ग) सत्त्व (घ) वेद (ग)

(xiii) पृथ्वी, अप् से आए हुए सिद्ध होते हैं-
(क) 4 (ख) 6
(ग) 10 (घ) 5 (क)

(xiv) तिर्यंच गति से निकलकर उपदेश से बोध पाने वालों का अन्तर है-
(क) शत पृथक्त्व वर्ष का (ख) संख्यात हजार वर्ष का
(ग) 1 वर्ष से कुछ अधिक का (घ) 1000 वर्ष का (क)

(xv) ऊर्ध्वलोक में सिद्ध होते हैं-
(क) जलाशय से (ख) पण्डक वन से
(ग) वप्रा विजय से (घ) समुद्र से (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1=(15)**

(i) पुढ़वीकाल का दूसरा नाम सूक्ष्मकाल नहीं है। (नहीं)

(ii) कायस्थिति के थोकड़े का अन्तर जीवाजीवाभिगम सूत्र से लिया गया है। (हाँ)

(iii) पृथ्वीकाय, अप्काय, तैजसकाय, वायुकाय और त्रसकाय का उत्कृष्ट अन्तर वनस्पतिकाल का है। (हाँ)

(iv) करण अपर्याप्त वे जीव हैं, जिनके पर्याप्त नाम का उदय भी है तथा जिन्होंने स्वयोग्य पर्याप्तियों को पूर्ण कर लिया है। (नहीं)

(v) छद्मस्थ आहारक की उत्कृष्ट कायस्थिति बादरकाल की होती है। (हाँ)

(vi) मन,वचन और काया इन तीनों योगों की प्रवृत्ति एक साथ एक ही समय में नहीं हो सकती है। (नहीं)

(vii) 'पंकज' शब्द का अर्थ कीचड़ से उत्पन्न होने वाला होता है। यह उदाहरण सम्मत सत्य का नहीं है। (नहीं)

(viii) उपघात निःसृत असत्य भाषा का एक भेद है। (हाँ)

(ix) कार्मण पुद्गल सूक्ष्म हैं और बहुत से परमाणुओं से निष्पन्न होते हैं, अतः वे एक ही बार में अल्पग्रहण किये जाते हैं। (नहीं)

(x) वचन पुद्गल परावर्तन से वैक्रिय पुद्गल परावर्तन का निष्पत्तिकाल अनन्त गुणा है। (हाँ)

(xi) सूक्ष्म द्रव्य पुद्गल परावर्तन में विवक्षित एक शरीर के सिवाय यदि अन्य शरीर के रूप में परिणत करके जिन पुद्गलों को छोड़ा जाता है, उनको भी गिनते हैं। (नहीं)

(xii) भगवती सूत्र के पहले शतक में दूसरे उद्देशक में मड़ाई निर्ग्रन्थ का थोकड़ा चलता है। (नहीं)

(xiii) मड़ाई निर्ग्रन्थ बाह्य और आभ्यन्तर श्वासोच्छ्वास लेता है, इसलिए वह 'प्राण' कहलाता है। (हाँ)

(xiv) व्यवहार नय की अपेक्षा से अनेक सिद्धों का क्षेत्र मनुष्य क्षेत्र के समान है। (नहीं)

(xv) पुरुष तीर्थंकर और स्त्री तीर्थंकर निरंतर दो समय तक सिद्ध हो सकते हैं। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1=(10)**

(I)	पद्मलेश्या वाले की उत्कृष्ट स्थिति	(क) 33 सागरोपम अन्तर्मुहूर्त अधिक	10 सागरोपम अन्तर्मुहूर्त अधिक
(ii)	आज यहाँ दस मरे	(ख) व्यवहार भाषा	विगत मिश्रिता
(iii)	सुख-दुःख को भोगता है	(ग) विगत मिश्रिता	वेद
(iv)	अभिगृहीता	(घ) 10 सागरोपम अन्तर्मुहूर्त अधिक	व्यवहार भाषा
(v)	स्त्रीवेद की उत्कृष्ट स्थिति	(च) संख्यात हजार वर्ष	पूर्व कोटि पृथक्त्व अधिक पल्योपम पृथक्त्व
(vi)	नरक गति से निकलकर सिद्ध होने वालों का उत्कृष्ट अन्तर	(छ) एक कुक्षि	1 वर्ष से कुछ अधिक
(vii)	एक उत्सेध अंगुल	(ज) पूर्व कोटि पृथक्त्व अधिक पल्योपम पृथक्त्व	आठ जूं
(viii)	कृष्णलेश्या की उत्कृष्ट स्थिति	(झ) आठ जूं	33 सागरोपम अन्तर्मुहूर्त अधिक
(ix)	अड़तालीस अंगुल	(य) 1 वर्ष से कुछ अधिक	एक कुक्षि
(x)	अन्तरपूर्वक सिद्ध होने वालों का उत्कृष्ट अन्तर	(र) वेद	संख्यात हजार वर्ष

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(i)	मेरी उत्कृष्ट कायस्थिति 2000 सागरोपम झाझेरी है।	त्रसकाय
(ii)	मेरी मान्यतानुसार उपशम श्रेणि किया हुआ उसी भव में क्षपक श्रेणि कर सकता है।	कर्मग्रन्थ
(iii)	मेरी उत्कृष्ट कायस्थिति छह आवलिका है।	सास्वादन सम्यक्त्व
(iv)	मुझमें 5825 के लगभग आवलिकाएँ होती हैं।	एक सेकण्ड में
(v)	मेरे अभाव में मनःपर्यवज्ञान का अभाव हो जाता है।	संयम
(vi)	मेरे द्वारा भाषा वर्गणा के पुद्गलों का ग्रहण होता है।	औदारिकादि काय योग
(vii)	छत्र के सम्बन्ध से पुरुष को छत्री कहना मेरा उदाहरण है।	योग सत्य
(viii)	मैं गंभीर शब्द अर्थ वाली होने से स्पष्ट न होने वाली भाषा हूँ।	अव्याकृता
(ix)	मेरा परिमाण दो हजार धनुष का है।	एक गाउ
(x)	मेरा संचार होने पर एक खंड भी उड़ता नहीं है।	संवर्तक वायु
(xi)	मैं तीन ऋतुओं के मिलने से बनता हूँ।	अयन
(xii)	मैं त्रिकालवर्ती हूँ।	भूत
(xiii)	मुझमें सलीलावती और वप्रा इन दो विजयों से भी जीव सिद्ध होते हैं।	अधोलोक
(xiv)	मेरे बिना कोई भी सिद्ध नहीं होता।	यथाख्यात चारित्र
(xv)	उत्सर्पिणी काल में चौथे आरक के आदि में मेरा शासन संख्यात काल तक चलता है।	24वें तीर्थंकर

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 9x2=(18)

(i) स्त्रीवेद की 5 प्रकार की कायस्थिति से क्या स्पष्ट होता है ?

मनुष्य स्त्री अथवा तिर्यंच स्त्री देवलोक में देवी रूप में उत्पन्न हो तो दो बार से अधिक उत्पन्न नहीं होती। अर्थात् मनुष्य स्त्री/तिर्यंच स्त्री और देवी, मनुष्य स्त्री/तिर्यंच स्त्री और देवी इस प्रकार से लगातार देवी के अधिकतम 2 भव ही होते हैं।

(ii) अवधि ज्ञान की कायस्थिति जघन्य एक समय की किस प्रकार समझनी चाहिए ?

जब कोई विभंगज्ञानी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, मनुष्य या देव सम्यक्त्व प्राप्त करता है तो उसका विभंगज्ञान अवधिज्ञान में बदल जाता है। एक समय बाद ही मृत्यु हो जाने या अन्य कारणों से जब अवधिज्ञान नष्ट हो जाता है, तब उसकी स्थिति एक समय की होती है।

(iii) लब्धि अपर्याप्त कौनसे जीव हैं ?

लब्धि अपर्याप्त वे जीव हैं जो स्वयोग्य पर्याप्तियों को पूर्ण किये बिना ही अपर्याप्त अवस्था में काल कर जाते हैं। ऐसे जीव मनुष्य व तिर्यंच गति में ही होते हैं। ये जीव एकान्त मिथ्यादृष्टि होते हैं।

(iv) तेरहवें, चौदहवें गुणस्थान में केवली अनिन्द्रिय क्यों होते हैं ?

तेरहवें, चौदहवें गुणस्थान में केवलज्ञान होने से केवली इन्द्रियों का उपयोग जानने में नहीं करते, अतः अनिन्द्रिय होते हैं।

(v) जनपदसत्य उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

जनपद सत्य- देश विदेश की अपेक्षा इष्ट अर्थ का ज्ञान कराने वाली, व्यवहार की हेतु रूप जो भाषा है वह जनपद सत्य है। जैसे कोंकण देश में पानी को 'पिच्च' कहते हैं।

(vi) भाषा का संस्थान द्वार स्पष्ट कीजिए।

संस्थान द्वार- भाषा का संस्थान वज्र के आकार का है। लोक वज्र के संस्थान (आकार) वाला है। भाषा के द्रव्य भी सारे लोक में व्याप्त है। अतः भाषा भी वज्र के संस्थान वाली है।

(vii) प्रतर भेद किसे कहते हैं ?

बांस, बेंत, बरु, केला और अभ्रक का प्रतर की तरह जो भेद होता है वह प्रतर भेद है।

(viii) तिर्यंच गति से निकलकर उपदेश से बोध पाने वालों का तथा निमित्त से बोध पाने वालों का अन्तर लिखिए।

उपदेश से बोध पाने वालों का अन्तर- शत पृथक्त्व वर्ष का

निमित्त से बोध पाने वालों का अन्तर- संख्यात हजार वर्ष का।

(ix) कौन-कौन से स्थानों से निकले जीव मनुष्य गति से सिद्ध हो सकते हैं ?

पहली चार नरकों से, पृथ्वी-पानी और प्रत्येक वनस्पति से, संज्ञी तिर्यंच-पंचेन्द्रिय, मनुष्य, भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषि और वैमानिक, इन चार प्रकार के देवताओं से निकले हुए जीव मनुष्य गति से सिद्ध हो सकते हैं।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 9x3=(27)

(i) अर्द्धपुद्गल परावर्तन काल किसे कहते हैं ?

इसमें अनन्त उत्सर्पिणी, अनन्त अवसर्पिणी काल लगता है। क्षेत्र की अपेक्षा- अनन्त लोक प्रमाण। अर्थात् अनन्त लोकों में जितने आकाश प्रदेश रहे हुए हैं, उन्हें प्रति समय गिनने (निकालने) में जितना समय लगे, उतने काल को अर्द्ध पुद्गल परावर्तन काल कहते है।

(ii) स्त्रीवेद के निरन्तर 9 भव हो सकते हैं। इसे स्पष्ट कीजिए।

स्त्रीवेद के लगातार 9 भेद हो सकते हैं। सात भव करोड़-करोड़ पूर्व के, एक भव युगलिक का, एक भव देवी का, अथवा सात भव करोड़-करोड़ पूर्व के, दो भव देवी के होते हैं। 9 भवों के बाद अवश्य ही वेद बदल जाता है।

(iii) छद्मस्थों के साकार-अनाकार उपयोग की जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति अन्तर्मुहूर्त की क्यों बतलायी है?

छद्मस्थों का उपयोग क्षायोपशमिक भाव युक्त होने के कारण एवं उपयोगों की अनेकविधता होने से इनकी जघन्य तथा उत्कृष्ट स्थिति अन्तर्मुहूर्त्त की होती है।

(iv) भाषा का पर्यवसित द्वार लिखिए।

भाषा के पुद्गल लोकान्त तक जाते हैं। आगे गति का आधारभूत धर्मास्तिकाय नहीं है अतः भाषा के पुद्गलों का आगे जाना संभव नहीं है। विशिष्ट शक्ति सम्पन्न पुरुष द्वारा बोले हुए भाषा के पुद्गल लोकान्त पर्यन्त तक जाते हैं, नहीं तो संख्यात असंख्यात योजन तक जाकर नष्ट हो जाते हैं।

(v) कार्मण पुद्गल परावर्तन निष्पत्ति काल सबसे थोड़ा है, इसे स्पष्ट कीजिए।

क्योंकि कार्मण पुद्गल सूक्ष्म है और बहुत से परमाणुओं से निष्पन्न होता है, इसलिए वे एक ही बार में बहुत से ग्रहण किये जाते है तथा नैरयिकादि सभी अवस्था में रहा हुआ जीव, प्रति समय उनकों ग्रहण करता है, इसलिए स्वल्पकाल में ही उन सभी पुद्गलों का ग्रहण हो जाता है।

(vi) बादर और सूक्ष्म दोनों पुद्गल परावर्तनों में क्या अन्तर है?

बादर में औदरिक, वैक्रिय आदि के जगद्वर्ती समस्त परमाणुओं को आहारक को छोड़कर औदारिक आदि कार्मण वर्गणा पर्यन्त सात रूपों में परिणत करना द्रव्य पुद्गल परावर्तन माना जाता है।

सूक्ष्म द्रव्य पुद्गल परावर्तन में विवक्षित एक शरीर के सिवाय यदि अन्य शरीर के रूप में परिणत कर करके जिन पुद्गलों को छोड़ा जाता है, उनको नहीं गिनते हैं। परन्तु सुदीर्घकाल में भी विवक्षित एक शरीर रूप में जब जगद्वर्ती परमाणुओं को परिणत करे, तब उसका परिणाम गिना जाता है।

(vii) सिद्धों की अवगाहना द्वार लिखिए।

जघन्य दो हाथ, मध्यम सात हाथ और उत्कृष्ट 500 धनुष की अवगाहना वाले सिद्ध होते हैं। तीर्थंकरों की जघन्य अवगाहना को यहाँ मध्यम कहा है। अन्यथा तो जघन्य से अधिक तथा उत्कृष्ट से कम की सभी अवगाहना मध्यम ही कहलाती है।

(viii) पृथ्वीकाय से, अप्काय से, वनस्पति से, मनुष्य से, मनुष्य स्त्री से तथा देवगति से निकले हुए एक समय में उत्कृष्ट किनते-कितने सिद्ध होते हैं ?

पृथ्वी, अप् से आये हुए चार, वनस्पति से छः, मनुष्य से निकले हुए दस, मनुष्य स्त्री से बीस, देवगति से आये हुए एक सौ आठ सिद्ध होते हैं।

(ix) आनपान पुद्गल परावर्तन से मन पुद्गल परावर्तन का निष्पत्ति काल अनन्त गुणा होने का क्या कारण है ?

यद्यपि आनप्राण पुद्गलों से मन पुद्गल सूक्ष्म और बहुप्रदेशी है, इसलिये अल्पकाल में ही उनका ग्रहण हो सकता है, तथापि एकेन्द्रियादि की कायस्थिति बहुत लम्बी है। उसमें चले जाने पर मन की प्राप्ति बहुत लम्बे समय में होती है। इसलिये मन पुद्गल परावर्तन निष्पत्तिकाल उनसे अनन्त गुण कहा गया है।